

[श्री नौशीर भल्चा]

अतः इस प्रकार की बातें निरर्थक हैं। वस्तुतः शक्ति का उत्पादन चाहे किसी स्रोत से हुआ हो उस की खपत करना और उस से मुनाफा उठाना संभव होगा। अणु शक्ति के उत्पादन के समर्थन में एक बात यह है कि इस के उत्पादन की लागत दिनों दिन घटती जायेगी तथा हमारे पास शक्ति का एक ऐसा अजस्र स्रोत उपलब्ध हो सकेगा जिस पर हम भरोसा कर सकेंगे।

†प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) : अणुशक्ति विभाग ने खासी व्यापक रिपोर्ट तैयार की है और उस में काफी कुछ बताया गया है। मंत्री स्वयं इतना नहीं बता सकते क्योंकि अधिकांश सदस्यों की भांति मंत्री भी इस विषय में ज्यादा नहीं जानते और उन्हें यह डर भी रहता है कि ऐसा न हो उन से ऐसे प्रश्न पूछ लिये जायें जिन का वे उत्तर न दे सकें। सभा के सदस्यों ने न केवल अणुशक्ति विभाग के काम की प्रशंसा की है बल्कि यह भी कहा है कि सरकार को चाहिये कि वह इस विभाग के काम को और तेजी से आगे बढ़ाये। इस स्थिति में मैं क्या कह सकता हूँ ; मेरे सामने यही कठिनाई है।

कई बार मेरे दिमाग में यह बात आती है कि हम लोग भारत में एक साथ विभिन्न प्रकार के युगों तथा शताब्दियों में रह रहे हैं। एक बार मैं ने साधारण रूप से कहा भी था कि भारत गोबर के युग में से गुजर रहा है। इस से मेरा आशय यह था कि इस जमाने में भी यहां गोबर 'पावर' प्राप्त करने का प्रमुख साधन है। परन्तु इसी के साथ साथ, अणु शक्ति उत्पन्न करने वाले विकसित देशों में भी हमारी गिनती होती है। इस कारण हम विभिन्न शताब्दियों के तरीकों को अपनाते हुए भी एक ही समय में विभिन्न युगों में से गुजर रहे हैं।

अणु शक्ति के विकास की ओर हम ने जो ध्यान दिया है वह निस्सन्देह लाभदायक एवं उपयोगी है। उपयोगी इस दृष्टि से कि इस के फलस्वरूप हमें वास्तविक लाभ होने शुरू हो गये हैं और भविष्य में भी अनेक लाभ होंगे। किन्तु दूरदर्शिता के दृष्टिकोण से यह काम और भी उपयोगी है। शीघ्रता से बदलने वाली इस दुनिया में उस समय एक नये युग का प्रादुर्भाव हुआ था जब हीरोशिमा में अणुबम गिरा अर्थात् इस नयी शक्ति का प्रयोग हुआ। तब से ले कर अब तक इस शक्ति का काफी विकास हुआ है और यह विकास विनाशकारी तथा रचनात्मक दोनों दिशाओं में हुआ है।

अतः अणु शक्ति आधुनिक युग का सही प्रतीक है जिस के दो रूप हैं। इस से संसार का विनाश भी हो सकता है और शीघ्र निर्माण भी। दोनों संभावनायें विद्यमान हैं।

जहां तक हमारा सम्बन्ध है, हमने निश्चय किया है कि हम अणु बम आदि विध्वंस कारक शस्त्र नहीं बनायेंगे। किन्तु हमारा यह भी निश्चय है कि हम इस नयी शक्ति के विकास और उपयोग में किसी से पीछे भी न रहेंगे। यह सच है कि जो देश इस शक्ति का विकास कर लेगा वह इसे अच्छे काम के लिए भी प्रयोग कर सकता है और बुरे के लिए भी। इसके साथ ही मैं जो घोर घोरणा यहां कर दूँ उससे आगामी सरकारें भी वचनबद्ध नहीं होंगी। पर मुझे आशा है कि हम इस देश में ऐसा वातावरण पैदा करेंगे जिससे कि कोई भी भावी सरकार अणु शक्ति को बुरे काम में न लायेगी। यह शक्ति भविष्य की प्रतीक है। हम पहले विज्ञान, टैक्नालाजी, आदि चीजों में पिछड़ गये थे और हम अब अन्य देशों के बराबर आने का प्रयत्न कर रहे हैं। अब हमें इस मामले में तो पीछे नहीं रहना चाहिये और आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिये। इसलिए वर्तमान

लाभ के अतिरिक्त भविष्य के दृष्टिकोण से भी यह अत्यावश्यक है कि हम आगे बढ़ें। हम यह हिसाब तो आसानी से लगा सकते हैं कि एक बिजली घर के निर्माण पर इतना रुपया खर्च आयेगा परन्तु बात यहां तक ही नहीं। इससे भी ज्यादा गहरी है। हम तो भविष्य को सुधारना चाहते हैं इसलिये वर्तमान में इसका पूरा उपयोग करना चाहते हैं। इस कारण यह बात संतोषजनक है कि इस क्षेत्र में हम प्रगति कर रहे हैं और नियमित रूप से आगे बढ़ रहे हैं।

प्रतिवेदन में सारा व्यौरा दिया हुआ है। माननीय सदस्यों ने विभाग के प्रमुख डा० भाभा को ठीक ही बधाई दी है परन्तु मैं यहां इस बात पर जोर दूंगा कि इस बधाई के पात्र वे सभी युवक वैज्ञानिक भी हैं जो वहां पर अपनी प्रतिभा का योगदान कर रहे हैं। एक दो आदमी कोई बड़ा काम नहीं कर सकते। अगुशक्ति विभाग ने, युवक वैज्ञानिकों में से होशियार लोगों को छांट कर वांछनीय प्रशिक्षण दिया है और मेरे विचार में उस विभाग का यह काम प्रशंसनीय है। इस प्रकार हमारे पास सुयोग्य वैज्ञानिकों की एक मंडली तैयार हो गयी है। मुझे याद है कि इंग्लैंड या अमेरिका के कुछ सुविख्यात वैज्ञानिकों ने इस का एक बार जिक्र किया था। जब विदेशी वैज्ञानिक ट्राम्बे देखने जाते हैं तो सभी यह बात कहते हैं कि वहां युवक वैज्ञानिक बड़ा उत्तरदायित्वपूर्ण काम करने लगे हैं। मेरी यही कामना है कि अन्य विभागों में भी हमारे यहां इसी प्रकार के यत्नक काम करें।

बहुत से सदस्यों ने, जो यहां पर बोले, हमें इस प्रतिवेदन से अथवा दूसरी जगहों से काफी जानकारी थी। मैं कोई और बात न कह कर केवल कुछ बातों की पुनरावृत्ति मात्र करना चाहूंगा। पहली बात तो यह है कि भारत ने अब ईंधन तत्वों के निर्माण के तरीके का विकास कर लिया है। यह बहुत बड़ा काम है। इस खोज का एक परिणाम यह निकला है कि हम बहुत सारी विदेशी मुद्रा की बचत करने लगे हैं। सही आंकड़े मेरे पास नहीं हैं परन्तु जैसे जैसे हम आगे बढ़ते जायेंगे वैसे वैसे हमें अधिक बचत होगी। जो आंकड़े मेरे पास हैं उनके अनुसार ईंधन निर्माण की इस सुविधा पर ८१ लाख रुपया खर्च करके, जिसमें से ४० लाख रुपये की विदेशी मुद्रा थी, हम ४५ लाख रुपये की विदेशी मुद्रा हर साल बचा लेते हैं। अधिक उत्पादन होने पर हम और अधिक मुद्रा की बचत कर सकेंगे।

जहां तक अप्सरा अणु भट्टी का सम्बन्ध है उसमें शक्ति के उत्पादन का स्तर भी काफी बढ़ा है और चार ही वर्षों में १७,८४० के० डब्ल्यू० एच० से बढ़ कर १० लाख के० डब्ल्यू० एच० तक पहुंच गया है। अब ज्ञात हुआ है कि कनाडा-भारत भट्टी भी १० जुलाई को चालू हो गयी है। आइसोटोप बनाने की यह दुनिया की सब से बड़ी भट्टी होगी। अभी ज़रलीना का निर्माण किया जा रहा है।

मैं आप लोगों का ध्यान ट्राम्बे संस्थापन के इलेक्ट्रोनिक्स डिब्बीजन की ओर भी दिलाना चाहता हूँ। हम बिजली के बड़े बड़े कारखानों का निर्माण कर रहे हैं। उधर ट्राम्बे संस्थापन ने एक बड़ा भारी इलेक्ट्रोनिक्स डिब्बीजन तैयार कर लिया है जिसमें सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तैयार किये जाते हैं। यह बड़ा महत्वपूर्ण काम है। इलेक्ट्रोनिक्स भविष्य में निश्चित रूप से उपयोगी हैं।

किसी माननीय सदस्य ने प्रशिक्षण की बात उठायी थी। प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस समय हम विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा स्कूलों की सहायता कर रहे हैं। मेघनाद इस्टीमेट

[श्री जवाहर लाल नेहरू]

ऑफ़ न्यूक्लियर फ़िज़िक्स को हम विशेष रूप से सहायता प्रदान कर रहे हैं। इसके अलावा तीसरी योजना में एक प्रस्ताव यह भी है कि दो अन्तर्विश्वविद्यालय अणु केन्द्र खोले जायें जिनमें से एक उत्तर भारत में तथा दूसरा दक्षिण में हो। हम ने महसूस किया कि इन चीजों को एक विश्वविद्यालय तक ही सीमित रखना लाभदायक न होगा वरन् इसका एक खास क्षेत्र में प्रसार ही उपयोगी होगा।

वास्तविक स्थिति यह है कि हमारे पास इतने संसाधन भी नहीं कि हम हर जगह भट्टियां स्थापित कर सकें और न ही हमारे पास अभी तक प्रशिक्षित वैज्ञानिकों की काफी संख्या है। ऊंची गवेषणा में पहले से ही हमारे सामने काफी कठिनाई रही है। ठीक है, हमारे विश्वविद्यालयों में सामान्यतया दो-तीन बहुत योग्य और बढ़िया व्यक्तित्व हो सकते हैं और वे अच्छा काम भी करते हैं; पर वे एक जगह नहीं होते। एक आदमी यहां है तो दूसरा वहां। आजकल की गवेषणा के लिए सुयोग्य वैज्ञानिकों के दल चाहिए जो एक जगह मिलकर काम करें। परन्तु ऐसी बात हमारे यहां होती नहीं है। ट्राम्बे में सफलता मिलने का मुख्य कारण यही है कि वहां पर योग्य वैज्ञानिकों का एक दल है। यदि यही लोग भारत में यत्र तत्र बिखरे हुए होते तो शायद ऐसे परिणाम न निकल पाते। इसलिये आरम्भ में हम केवल दो केन्द्र खोलना चाहते हैं; एक उत्तर में और दूसरा दक्षिण में। वहां पर उन क्षेत्रों के विश्वविद्यालयों के लोग जाकर गवेषणा कार्य कर सकेंगे। मैं यह नहीं कह सकता कि ये केन्द्र कहां पर बनाये जायेंगे। हो सकता है विश्वविद्यालयों में या उनके निकट ही उनकी स्थापना की जाये। पर उनकी स्थापना की जायेगी।

इन केन्द्रों में भट्टियां (रिएक्टर) होंगी और इसके अलावा अन्य सभी प्रकार का साजसामान होगा। विभिन्न विश्वविद्यालय के लोग वहां पर शोध सम्बन्धी कार्य करेंगे। हम चाहते हैं कि विश्वविद्यालय बुनियादी प्रशिक्षण दें और कुछ उच्च प्रशिक्षण भी दें; किन्तु इस समय वास्तविक रूप में उच्च प्रशिक्षण ट्राम्बे में ही दिया जा रहा है।

शायद किसी माननीय सदस्य ने बताया भी है और मैं उसे दोहराता हूँ कि वहां पर प्रति वर्ष २०० ग्रेजुएट वैज्ञानिकों तथा इंजीनियरों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है और हम केवल भारतीयों को ही वहां प्रशिक्षण नहीं दे रहे, बल्कि एशिया के अन्य भागों के लोगों को भी प्रशिक्षण दे रहे हैं।

यह तो सब हो ही रहा है पर जनता का ध्यान आणित्वक बिजलीघरों की ओर केन्द्रित है। श्री भरूचा चाहते हैं कि इस काम को बढ़ाया जाय और काफी तेजी से आगे ले जाया जाय। मैं भी ऐसा ही करना चाहता हूँ। हमें आगे बढ़ना चाहिए मगर ठोस आधार पर। इसलिये हमने एक बिजलीघर की व्यवस्था करने का निश्चय किया है। हम दो और आणित्वक बिजलीघर बनाने की बात सोच रहे हैं जिनमें से एक की अधिष्ठापित क्षमता १५० मेगावाट हो और दोनों कारखाने दो पाली के हिसाब से चल सकें। आशा है कि हमें इसमें सफलता प्राप्त हो।

इंधन से चलाये जाने वाले बिजलीघर तथा अणुशक्ति से चलाये जाने वाले बिजलीघर की लागत आदि का हिसाब लोग लगा सकते हैं। पर मैं समझता हूँ इस दृष्टिकोण से भी अणु शक्ति चालित बिजलीघर लगाने में फायदा है। लागत के अलावा भी यह बहुत बड़ी चीज है, इसे लागत से नहीं नापा जा सकता। हमें दुनिया के साथ चलना है और भविष्य को अपने हाथ में रखना है। मैं बड़ी नम्रता से निवेदन करता हूँ और मैं किसी की आलोचना नहीं करना चाहता कि भारत में हम लोग सामान्य रूप से वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अपना

नहीं चलते। हम जैसे हैं वैसे ही रहना पसंद करते हैं। हम यह नहीं महसूस करते कि हम जिस दुनिया में रहते हैं वह प्रति क्षण बदलती जा रही है। हम क्रान्तिकारी आविष्कारों की खबरें अखबारों में पढ़ लेते हैं पर हमें बदलती हुई इस दुनिया बौद्धिक आभास नहीं हो पाता। फलतः परमाणु शक्ति के काम में हमें परिवर्तनशील विश्व का प्रतिबिम्ब नहीं दिखाई पड़ता। हमें यह ज्ञात नहीं होता कि भविष्य की रूपरेखा क्या होने वाली है। शायद कुछ सदस्यों ने इस बात का उल्लेख भी किया था कि इन कारखानों से हमारा दोहरा प्रयोजन सिद्ध होगा। एक तो हमें इनसे बिजली मिलेगी और दूसरे प्लूटोनियम। प्लूटोनियम बड़ा महत्वपूर्ण पदार्थ है और बाहर से वाणिज्यिक स्तर पर इसे उपलब्ध नहीं किया जा सकता। इस पदार्थ का उत्पादन करना अनिवार्य है। इस से हम ब्रीडर बिजली घर स्थापित कर सकते हैं जिसमें थोरियम का भ्रयोग होता है और हमारे पास थोरियम की काफी मात्रा है। इन समस्त दृष्टिकोणों से इन बिजली घरों का निर्माण करना हमारे लिये बड़ा आवश्यक है।

इसकी लागत के बारे में कुछ गलतफहमियां हैं। कई बार अखबारों में इस प्रकार के लेख छपते हैं कि आणविक बिजली घर बनाना अनार्थक प्रस्थापना है। आखिर हमारे देश को अमेरिका, इंग्लैंड और रूस के बारबर चलना है। रूस के बारे में, मुझे कोई विशेष जानकारी नहीं है पर इंग्लैंड के आणविक कार्यक्रम से सम्बद्ध श्वेतपत्र मेरे पास है। जो लोग यह समझते हैं कि इंग्लैंड ने अणुशक्ति से बिजली पैदा करने का कार्यक्रम कम कर दिया है या इसे छोड़ दिया है, वे गलत समझते हैं। इस प्रकार की कोई बात नहीं है। सही बात तो यह है कि वे इस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं पर फ़िलहाल सहारा में काफी कोयला और तेल मिला है और इसलिये वे इसे प्रयोग करने का यत्न कर रहे हैं। खैर लागत के बारे में मैं कुछ पंक्तियों का उद्धरण दूंगा। बिजली की लागत में वास्तविक कमी हुई है ; यह सच है पर इस में कहा गया है :

“आणविक संस्थापनों में पूंजीगत व्यय अधिक होता है परन्तु आधुनिक युग में बनाये जाने वाले बिजली घरों में उस व्यय की भी कमी होती जा रही है।”

यह कमी जिस रफ्तार से होती जा रही है उसे देख कर आश्चर्य होता है।

“अतः हमें आगे चल कर आणविक शक्ति की खासी मात्रा की आवश्यकता होगी। अगर हमें टेकनोलौजी में वह प्रगति प्राप्त हो जाये जिसकी आशा हमें है तो दस साल के समय में हम आणविक बिजली घरों में, पुराने ढंग के बिजली घरों की अपेक्षा सस्ती बिजली पैदा कर सकेंगे। इस सफलता के लिये हमें पर्याप्त आणविक बिजली घरों का निर्माण करना चाहिए।”

हमें स्मरण रखना चाहिए कि कुछ प्राप्त करने के लिये हमें काम जारी रखना पड़ता है। ऐसा नहीं हो सकता कि हम प्रतीक्षा करें और तब तक जब तक अमेरिका या रूस सफलता प्राप्त न कर लें। हम केवल अनुकरण करना नहीं चाहते। हमें उन के कामों का तो फ़ायदा मिलेगा लेकिन हम खुद पिछड़ जायेंगे और अपने वैज्ञानिकों को बढ़िया काम करने के लिये प्रशिक्षण नहीं दे पायेंगे ; वे सिर्फ नकल करना सीख पायेंगे। परन्तु आगे रहने के लिये हमें स्वयं निर्माण करना है। यदि हम अपना काम छोड़ कर किती ऐसे अवसर की प्रतीक्षा करेंगे जब कि कोई दूसरा इस में सफल हो जाय तब हम पिछड़ जायेंगे। उस के बाद

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

हम फिर प्रगति कर सकते हैं पर हमारा समय तो नहीं लौटेगा। इंग्लैंड के श्वेत पत्र में लिखा है :

“इन हालात में, सरकार ने यह निर्णय किया है कि राष्ट्रीय हित को देखते हुए इस समय प्रति वर्ष एक आणविक स्टेशन का आर्डर दिया जाता रहे।”

इस के बाद रॉयल सोसाइटी की तीसरी शताब्दी के सामारोह में श्री क्रिस्टोफर हिटन का भाषण यहां है। इस से पता चलता है कि लागत में बराबर कमी आती जा रही है। एक चार्ट भी है और इंग्लैंड के स्टेशनों का उल्लेख किया गया है। बर्कले में प्रतिक्रिजोवाट लागत १६० पाउंड आई थी, ब्रैडवेल में १५६ पाउंड, तीसरे स्टेशन में १३३ पाउंड, चौथे में १२३ और पांचवें में लगभग ११० पाउंड यानी हर नये स्टेशन में लागत की कमी होती जा रही है। जैसे जैसे अनुभव प्राप्त होता जा रहा है वैसे वैसे लागत में कमी आती जा रही है। जहां तक भारत का संबंध है, यहां पर लागत की दृष्टि से अधिक अनुकूल परिस्थितियां हैं। पुराने ढंग के तथा आणविक संस्थापनों की लागत में यहां काफी अन्तर रहेगा क्योंकि पुराने ढंग के बिजली घरों में कोयला आदि पहुंचाने का खर्च भी यहां काफी हो रही है। इस चार्ट के अनुसार आणविक बिजली घर की और दूसरे बिजली घर की लागत बराबर गिरती जा रही है। यहां पर कोयले से चलने वाला तथा अणुशक्ति से चलने वाला कारखाना दिखाया गया है। कोयले वाले कारखाने की लागत भी धीरे धीरे कम हो रही है पर आणविक कारखाने की लागत में तेजी से कमी होती जा रही है। ७५ प्रतिशत लोड तक, १९६६ में दोनों प्रकार के कारखानों की लागत बराबर हो जायगी और फिर आणविक कारखानों की लागत ही कम होगी अर्थात् उन से बिजली पैदा करना ज्यादा सस्ता रहेगा।

मेरे कहने का आशय यह है कि अब सब जगह जहां भारत की अपेक्षा स्थिति कम अच्छी है यह बात मानी जा रही है कि आगामी तीन चार वर्ष की अवधि में अणुशक्ति द्वारा चलाये जाने वाले कारखानों से बिजली पैदा करना सस्ता होगा। भारत जैसे देश में, जहां कोयला दूर से लाना पड़ता है, और फिर जहां वैसे क्षेत्र भी है जिन से पन-बिजली की परियोजनायें भी दूर हैं, वहां इन चीजों का बड़ा महत्व है। इस के अलावा यद्यपि भारत में कोयला काफी है किन्तु भविष्य में को देखते हुए इसे काफी नहीं कहा जा सकता; हमें भविष्य में चिन्ता करनी है। इस कारण हमें अभी से ही भविष्य के लिए प्रयत्न करने चाहिएं। यदि हम आणविक बिजली घर अभी से बनाना शुरू करें तो भी यह चार वर्ष के बाद तैयार हो पायेगा और यदि साथ साथ हम और कारखानों की स्थापना का प्रयास न करें तो निश्चित रूप से हम पिछड़ जायेंगे।

जैसा आप जानते हैं हम ने अब यह निश्चय किया है कि हम भारत के पश्चिमी तट पर बम्बई और अहमदाबाद के बीच पहला बिजली घर स्थापित करेंगे। अनेक सुविधाओं के कारण हम ने इस स्थान को चुना है। इस स्थान का नाम तारापुर है और यह महाराष्ट्र में है; परन्तु गुजरात की सीमा के काफी निकट है। चाहे यह महाराष्ट्र में हो या गुजरात में इस से कोई अन्तर नहीं पड़ता—क्योंकि बिजली तो यह दोनों को बराबर बराबर देगा। इस का फैसला हो चुका है। और वास्तव में बिजली के वितरण का काम एक समिति देखेगी जिस में गुजरात, महाराष्ट्र, तथा अणुशक्ति विभाग के प्रतिनिधि होंगे। यह कारखाना बड़ा महत्व-

पूर्ण होगा पर यह ऐसा कारखाना नहीं होगा जिस में लोगों को रोजगार मिल सके। इस में थोड़े से सुयोग्य व्यक्तियों के लिए रोजगार की व्यवस्था होगी।

श्री मुकजी ने आणविक तथा रेडियम सक्रिय जाया पदार्थों के निबटारे के बारे में कुछ कहा। यह मामला काफी महत्व का मामला है। मैं समझता हूँ कि वैज्ञानिक भी इस दिशा में कोई निश्चय नहीं कर पाये हैं। यह भारी समस्या है। यह कोई नहीं जानता कि इसे कहाँ रखा जाय। बियाना के अन्तर्राष्ट्रीय अणु शक्ति अभिकरण ने रेडियम सक्रिय पदार्थों के परिवहन तथा बचे खुचे अंशों के निबटारे के बारे में कई तालिकाएँ बनायी हैं और उस में भारतीय वैज्ञानिकों को भी निमंत्रित किया गया है। भारतीय वैज्ञानिक इन तालिकाओं के सदस्य हैं और रेडियम सक्रिय पदार्थों के परिवहन से सम्बद्ध तालिका के प्रधान भी एक भारतीय वैज्ञानिक थे। उनका नाम है श्री सेठना।

प्रशिक्षण के बारे में मैं एक बात कहना चाहता हूँ। हम द्राम्बे में पुनरध्ययन पाठ्यक्रम चालू कर रहे हैं ताकि विश्वविद्यालयों से वैज्ञानिक आकर वहाँ आणविक शक्ति का पुनरध्ययन कर सकें।

इस से ज्यादा मुझे कुछ नहीं कहना। आपको जो पुस्तकें दी गयी हैं उन में सारी जानकारी है। माननीय सदस्यों ने विभाग के कार्य की जो सराहना की है उस के लिए मैं उनका आभारी हूँ। शायद इस दृष्टि से यही विभाग ऐसा है कि जिसकी प्रशंसा ही हुई है। शेष विभागों की प्रशंसा एक स्वर से आज तक नहीं हो पायी।

†श्री दी० चं० शर्मा: मैं अधिक न कहकर केवल इतनी सी प्रार्थना करूँगा कि देश में दो की बजाय चार आणविक केन्द्रों की स्थापना की जाय और वैज्ञानिकों के वेतन स्तर में वृद्धि की जाय। इस समय उन्हें काफी वेतन नहीं मिलता।

†अध्यक्ष महोदय: प्रश्न यह है कि :

“यह सभा वर्ष १९५६-६० के लिए अणु शक्ति विभाग के प्रतिवेदन पर, जो १८ अप्रैल, १९६० को सभा-पटल पर रखा गया था, विचार करती है।”

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

मत विभाजन के परिणाम में शुद्धि

†अध्यक्ष महोदय: मुझे सभा को यह बताना है कि श्री नौशीर भरूचा के द्वारा अनिवार्य सेवा निर्वहन अध्यादेश का अननुमोदन करने के बारे में प्रस्तुत किये गये संकल्प पर ६ अगस्त, १९६० को जो मतदान हुआ था उस में एक गलती रह गयी थी लेकिन उस से सभा के निर्णय में कोई फर्क नहीं पड़ता। परन्तु तब भी सही बात ही अभिलिखित होनी चाहिए। सही बात यह है कि उस समय रानी केसर कुमारी देवी ने उठकर कहा था कि वह विपक्ष में वोट देना चाहती हैं। परन्तु फोटों से पता लगता है कि उन्होंने वोट पक्ष में डाला है। इसलिये पक्ष वाले वोटों में से एक वोट कम करना होगा। इस तरह से पक्ष में वोटों की संख्या ३८ के बजाय ३७ होगी।

इसके पश्चात् लोक-सभा गुरुवार ११ अगस्त, १९६० २० श्रावण, १८८२ (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।